© 2016 IJSRSET | Volume 2 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section: Education

छायावाद युगीन काव्य में सौन्दर्य चेतना

डॉ0 सारिका सक्सेना
M5/104, अल्फा कार्प, मेरठ वन कालोनी
मोदीपुरम वाईपास मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश– छायावाद हिन्दी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य धारा है जो लगभग ई.स. 1919 से 1936 तक की प्रमुख युगवाणी रही। यह काल व्दिवेदी युगोपरान्त हिन्दी काव्य का काल है। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा इस काव्य धारा के प्रमुख प्रतिनिधि कवि रहे हैं। छायावाद नामकरण का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है। कृति प्रेम, नारी प्रेम, मानवीकरण, सांस्कृतिक जागरण, प्रकृति सौन्दर्य, कल्पना की प्रधानता आदि छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषतायें हैं। छायावाद युग में हिन्दी की खड़ी बोली कविता का पूर्णतः प्रतिष्ठापन हो गया व इसके बाद हिन्दी काव्य धारा से ब्रजभाषा लुप्त हो गई। इस युग ने हिन्दी काव्य को नये शब्द, प्रतीक तथा प्रतिबिम्ब प्रदान किये जिसके परिणाम स्वरूप इस युग की गद्य भाषा भी समृद्ध हुई। इसे साहित्यिक खड़ी बोली का स्वर्ण युग कहा जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में छायावादी काव्य धारा के कवियों के रहस्यमयी प्रेम और कल्पना शीलता के विचारों को समझने, जानने और साहित्य जगत में उनके योगदान को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द- छायावाद, मानवीय, प्रतिष्ठापन, कल्पना, उत्पीड़न।

हिन्दी कविता में छायावाद का युग व्दिवेदी युग के बाद आया परन्तु इसका आरम्भ व्दिवेदी युग में ही हो गया था। इस युग ने भाषा और काव्य को नवीनता प्रदान की। छायावाद का सांस्कृतिक और भावनात्मक संबंध अतीत और अंग्रेजी के रोमांटिक काव्य से स्थापित हो गया था। छायावाद शब्द का अर्थ दो प्रकार से समझा जा सकता है एक ओर रहस्यवाद के रूप में अर्थात् जहां कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर प्रेम की व्याख्या चित्रमयी भाषा में करता है और दूसरी ओर इसे पद्धति विशेष या काव्य शैली के रूप में समझा जा सकता है।

हिन्दी का छायावादी काव्य, नये युग की चेतना के अनुसार प्रारंभ से ही अपने प्रगतिशील विचारों का परिचय देता रहा है। छायावाद की प्रगतिशीलता युग की परिस्थितियों, से उदयित हमारी संस्कृति और सामाजिक परम्पराओं का सहज विकास है। यह जीवन की समग्रता का काव्य है। इस

युग में जीवन के दोनो (आंतरिक और बाह्य) पक्षों का वर्णन हुआ है। और यह बताया गया है कि जीवन का मूल्य केवल शारीरिक ही नही मानसिक और आत्मिक भी है। छायावाद में वास्तविक मानवीय सौन्दर्य को चित्रित किया गया। इसने यथार्थ को नग्नता प्रदान नहीं की और न ही आदर्श को असंभव की सीमा में रहने दिया।

श्रेष्ठ साहित्य सदैव कला जीवन के लिए सिद्धांत स्वीकार करता है। अतः एक साहित्यकार का ध्येय जीवन में व्याप्त उत्पीड़न को समूल नष्ट करना होता है। प्रगतिशील साहित्य सदैव अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाहन करता है। यह सत्य है कि छायावाद युग में मानव जीवन के विकासमान स्वरूप को दर्शाया गया है।

"छायावाद ने सामाजिक बन्धनों को तोड़ने पर रुढ़ियों से विद्रोह करने की उद्दात भावना की सृष्टि की। यह छायावाद का प्रगतिशील विद्रोही पक्ष है।" छायावाद में जिन समालोचकों ने केवल मधुमय काव्य की पलायनवादी भूमिका देखी है उन्हें उन रचनाओं पर दृष्टिपात करना होगा। जो समाज की जटिल, ज्वलंत और समस्याओं के आधार पर रचित हैं। कवियों की आत्मनिष्ठ या वैयक्तिक भावधारा छायावाद में द्रष्टव्य नहीं है। उनकी वस्तुनिष्ठ काव्य दृष्टि भी सराहनीय है। दलित, दुर्बल और शोषित व्यक्तियों के क्रंदन को छायावाद में स्पष्ट स्वर मिले हैं। भारतीय ग्राम्य जीवन व लोकजीवन की सुंदर तस्वीरें पंत और निराला ने प्रस्तुत की है। छायावादी कवियों ने यथार्थ को वाणी दी है। निराला ने बहुत पहले से सदियों की जकड़े हृदय कपाट खोल कर रुढ़ियों और विषमताओं से मुक्ति का संदेश देने के लिए जागे। फिर एक बार कहा था प्राचीन जीर्ण शीर्ण कड़ियों को द्रुतझरों जगत के जीर्ण पात्र कहकर पंत ने मानो मटियामेट कर दिया है। नारी की मुक्ति और देवी सहचरी के रूप में इन छायावादी कवियों ने अपने प्रगतिशीलता का पूरा परिचय दिया है। वेदना को विश्व जीवन का मूल तत्व मानकर पलकों में करुणा का जल भरकर महादेवी ने भी मानवीय विवशताओं और अभावों को देखा है। जर्जर जीवन आंसू कुचले शैशव संसार को देखकर महादेवी स्पष्ट कह उठती है – जागो बेसुध!

निःसंदेह छायावाद ने यथातथ्य चित्रण द्वारा अपितु उस विशिष्ट मनोभूमि तक पहुँचने का एक स्वस्थ संबल दिया है। छायावाद में यथार्थ के उस पहलू को अपनाया है। जो व्यक्ति के पूर्णत्व को प्रतिपादित कर जन कल्याण की ओर प्रेरित करता है। छायावाद की प्रगतिशीलता का यह एक विशिष्ट आयाम है। छायावाद ने हमारी सांस्कृतिक व दार्शनिक पीठिका पर हमारे स्वस्थ आचारों-विचारों और मानवीय मूल्यों के अनुसार चेतना के अनुरूप जीवन की विविधमुखी प्रगतिशीलता का प्रमाण दिया है। छायावाद में सामाजिक जीवन की घटनायें एवम् समस्यायें अपना पूरा स्थान पा

सकी है। जो समालोचक यह आक्षेप करते हैं कि छायावाद को कोरी भावनावादी, कल्पनावादी, आत्मनिष्ठ या अन्तर्मुखी धारा है उन्हें यदि केवल निराला की रचनायें ध्यान से देखने का अवकाश मिले तो यह भलीभाँति समझा जा सकेगा कि वे एक वस्तुमुखी, तटस्थ, अनाशक्त और निवैयक्तिक कलाकार की साधना में लीन जीवनानुभव की व्यापकता और सामाजिक ससंस्पर्श से परिपूर्ण चेतना सम्पन्न कवि हैं। "छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ न होकर, मूल्यनिष्ठ रहा है। उसमें व्यक्तिमूल्य का प्रतिनिधि रहा है और जैसे-जैसे मूल्य के प्रति दृष्टिकोण का विकास होता रहा है उसका व्यक्ति तत्व भी विकसित होकर युग के सम्मुख एक अधिक व्यापक आदर्शोन्मुख जीवन दृष्टि उपस्थित करने की चेष्टा करता रहा है। छायावादी आदर्श विगत युगों की एक देशीय उद्दात्ता को अतिक्रम पर विश्वमुखी औदात्य से अनुप्राणित रहा है।" छायावाद में केवल शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश, शोषितों के प्रति शाब्दिक सहानुभूति, समानता का शब्द जाल और नारेबाजी तक सीमित प्रगतिशीलती नहीं है। इन कवियों ने प्रगतिशील सौंदर्य को परखकर उसे स्थायित्व प्रदान किया है। छायावाद की राष्ट्रीय रचनायें अपने उदार सांस्कृतिक उपादानों और सूक्ष्म अनुभूतियों के कारण ही इतनी व्यापक चेतना का परिचय देती है। संभवत: किसी अन्य युग की राष्ट्रीय रचनायें शायद ही इसकी समानता कर सके।

'भारति जय विजय कर', 'अरुण यह मधुमय देश तुम्हारा','हिमालय के आंगन में उसे प्रथम किरणों का ये उपहार' 'हिमाद्री-तुंग-श्रृंग से' – आदि रचनायें छायावाद की सशक्त भाव सम्पन्न विशिष्ट राष्ट्रीय काव्य धारा प्रस्तुत करती हैं। ओज प्रधान प्राणवंत पौरुष के परिचायक उद्बोधन गीतों से छायावाद बहुत सम्पन्न है। इन राष्ट्रीय रचनाओं में उपदेश, प्रवचन आदि ने होकर अनुभूति का सुन्दर आलोक है। भारतमाता का यथार्थ रूप तो करोड़ों, नग्नतन, क्षुधित, त्रसित, अशिक्षित, निर्धन व कंकालों में ही देखा जा सकता है।

निश्चित ही यह भावधारा पंत की प्रगतिशील चेतना का ज्वलंत उदाहरण है। पूँजीवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध कवि का आक्रोश और बादल की क्रांति प्रगतिशील राष्ट्रीय काव्यधारा की ही परिचायक है। छायावादी काव्य में स्वातन्त्रता भी है और सामाजिक निर्वाह भी। छायावादी की राष्ट्रीयता न धार्मिक है, न जातीय, न साम्प्रदायिक, न दलगत राजनीति का परिणाम और वह न अंधे देशप्रेम का प्रतीक ही है। अतः वह समस्त विश्व को अपने में समेटकर व्यापक स्वरुप का परिचय देती हुई अन्तर्राष्ट्रीय और उदार मानवतावाद में पर्यवसित होती है।

छायावादी काव्य ने अपनी प्रगतिशील रचनाओं में उदार मानवतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है और जीवन को उसकी समग्रता में देखा है। "तुम हो महान, तुम सदा हो महान," कहकर

कवि ने मानवीय गरिमा की स्थापना की है। सर्वभूत का कल्याण छायावादी काव्य की प्रधान जीवन दृष्टि है।

छायावादी काव्य ने निश्चित ही इस धरातल पर सुन्दर रचनायें प्रस्तुतकार राष्ट्रीय सीमा के जड़त्व का उखाड़ फेंका है और विश्व संस्कृति तथा उदार मानवतावादी भावना का परिचय दिया है। समाज के खोखलेपन को सामने रखा है।

साहित्य का अध्ययन एक प्रकार से मानवसत्ता का अध्ययन है। अतएव जो लोग केवल ऊपरी तौर पर साहित्य का ऐतिहासिक अथवा समाज शास्त्रीय परिवेश की बात करके चुप हो जाते हैं आवश्यकता नहीं की छायावाद में मनोवैज्ञानिक और सौंदर्यात्मक विवेचना की पूर्ण एकात्मकता रहे। छायावाद में मनो-वैज्ञानिक एवं सौन्दर्यवादी चेतना स्पृहणीय है। हमें उसके समाज शास्त्री दृष्टिकोण को भी परखना होगा। छायावादी काव्य में यद्यपि स्वयं के मनोभावों का प्रकटीकरण है। फिर भी वह जन विरोधी नहीं है।

छायावादी में मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा है। मानव मुक्ति का आहवान भी उन्होंने बाह्य परिस्थितियों से प्राप्त सत्य को अपने अन्तर्गत में एकाकार कर कलात्मक अभिव्यक्ति दी। वे समग्र मानव कल्याण को लेकर चले है।

छायावाद के विषय में कतिपय आलोचकों ने यह आरोप लगाया है कि स्त्रैण्य काव्य है, सजनीवादी काव्य है, इसमें नारी स्वछंद प्रेम का शिकार बन गयी है परन्तु छायावाद में केवल रूपगत् सौन्दर्य ही नहीं हृदयगत् सौंदर्य अंकित हुआ है। यह हृदयागत् सौंदर्य कवि विराट सौंदर्य से एकाका करता है। छायावाद में मानवीय अनुभूतियों की पूर्ण अभिव्यक्ति है मानव जीवन का उन्नायक या विकासोन्मुख काव्य ही प्रगतिशील होता है। समर्थ और स्वस्थ कवि निराला का सौंदर्य और श्रृंगार चाहे 'जूही की कली' में हो, चाहे 'सरोज स्मृति' पर स्खलन कहीं लेश भाव नहीं है। छायावाद में नारी के प्रति श्रद्धा और मानवता का भाव है। उसकी बोली में त्रिवेणी की लहरों का मान है। छायावाद में प्रणय स्फूर्तिदायक है। उसका अंत व्यापक रूप में समाजवाद में होता है तभी तो कवि प्रसाद 'आंसू' में शीतल कल्याणी ज्वाला के द्वारा लोक मंगल की भावना से अनुप्राणित है।

छायावादी काव्य की रचनाओं में भी दरिद्र नारायण की सेवा का ईश्वर की सेवाभाव, ईश्वर की सेवा के तुल्य ही निरुपित हुआ है। धर्म के स्थान पर धार्मिक रुढ़ियों का खण्डन और धर्म की ओट में पनपने वाले विकृत अमानवीय कृत्यों पर तीखा प्रहार छायावाद में किया गया है। निराला की 'दान' कविता का संकेत पर्याप्त होगा। दिनकर, बच्चन, अंचल, सुमन आदि के काव्य में ईश्वर और धर्म के प्रति क्षोभ भावना बड़ी गहराई से क्षोभ पा सकी है। छायावादोत्तर काव्य की भावना

विशेषतः उनके प्रगतिशील चिंतन का द्योतक है। मंदिरों में सिर मारने के स्थान पर मानव कल्याण ही कवियों का लक्ष्य है।

निष्कर्ष – छायावादी काव्य में मानवतावादी विचारधारा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, पीड़ित वर्ग के प्रति संवेदनशील होने के कारण छायावादी कवियों में जनकल्याण के प्रति स्वाभाविक रुचि है। छायावाद के समर्थ स्तम्भ श्री जयशंकर प्रसाद, पं0 सुमित्रानन्दन पंत, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, महीयशी महादेवी वर्मा की मानवतावादी विचारधारा का विकास समाज के अमानवीय तत्वों के विरोध में हुआ। कवियों ने रेखांकित किया है कि मानव ही मानव का भक्षक बना हुआ है। मानव की बुद्धि भौतिक मद से भ्रान्त हो गयी है। युग शोषक शोषित में विभक्त होकर विभिन्न जाति-पाति, वर्ग, श्रेणी में सत्-सत् खण्डित हो गया है। जीवन रस और एकता खो गयी है। जहाँ व्दिवेदी युगीन काव्य विषयनिष्ठ (वस्तुपरक) वर्णन प्रधान और स्थूल है, वहीं छायावादी काव्य व्यक्तिनिष्ठ और कल्पना प्रधान है। व्दिवेदीयुगीन कविता में सृष्टि की व्यापकता और अनेकरूपता को समेटा गया है किन्तु छायावादी कविता में मनोजगत की वाणी को प्रकट करने का प्रयत्न है। मनोजगत के सूक्ष्म तत्व को साकार करने के लिए छायावादी कवियों ने उर्वरा कल्पना शक्ति का उपयोग किया है।

संदर्भ सूची

1. आधुनिक कवि - सुमित्रानंदन पंत-1957
2. निराला, अनामिका भारती - सूर्यकांत त्रिपाठी – 1963
3. निराला, कुकुरमुत्ता - सूर्यकांत त्रिपाठी – 1969
4. निराला, गीतिका - सूर्यकांत त्रिपाठी – 2005
5. कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन – डॉ0 व्दारिका प्रसाद
6. कामायानी - जयशंकर प्रसाद
7. दीपशिखा - महादेवी वर्मा
8. यामा - महादेवी वर्मा
9. हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास - डॉ0 मोहन अवस्थी
10. उत्तर छायावाद - परिवेश और प्रवृत्तियाँ